© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

छायावादी युगीन काव्यों में राष्ट्रीयता

डॉ0 ओरेन्द्र कुमार यादव
पूर्व शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
वीर बहादूर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

समाज की तत्कालीन परिस्थितियों का साहित्य पर सीधा असर पड़ता है। छायावाद युग (1918–1936) में देश में ढ़ेर सारे प्रमुख आन्दोलन चल रहे थे। जिसका सीधा असर छायावादी काव्यों पर पड़ा। हालाँकि प्रत्येक युग का साहित्य तत्कालीन परिस्थितियों, सामाजिक परिवेश, राजनीतिक और धार्मिक संदर्भों में प्रभावित होता है। भारतवर्ष अंग्रेजों से गुलाम था औरउस गुलामी की लपट लेखकों और कवियों पर भी पड़ा। यही वजह है कि छायावादी युगीन कवियों ने अपनी बात को अधिकांशतः प्रकृति को आलम्बन बना कर व्यक्त किया हैं छायावाद के प्रतिनिधिकवि जयशंकर प्रसाद गुलामी की पीड़ा को इस प्रकार व्यक्त किया है–

''हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वंम प्रभा समुज्वला, स्वतन्त्रता पुकारती है।।

छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति है। महादेवी वर्मा जी का विचार है ''छायावादी में प्रकृति के अन्दर बिखरी सौन्दर्य सत्ता की रहस्यमयी अनुभूति को स्वानुभूत सुख–दुःखों से मिलाकर एक ऐसा काव्य रूप दिया गया है। जिसमें बह्म के विराट रूप के दर्शन होते हैं और सूक्ष्म सौन्दर्यानुभूति के साथ–साथ सर्ववाद जड़–चेतन की अभिन्नता व्यक्तिगत चेतना से व्यापक चेतना की एकता भावात्मक दर्शन आदि का निरूपण किया जाता है।

उधर प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने प्रकृति के माध्यम से जन सामान्य को सचेत करने का प्रयास किया है। उन्होंने आशक्त पड़े भारतियों को जगाते हुए कहा है कि–

'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दू लोचन
छोड़ अभी से इस जग को।।''

महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के काव्यों में राष्ट्रवाद अधिक मुखरित होता है। उनकी कविताओं में राष्ट्रवाद के अन्तर्गत राष्ट्र को केवल एक राजनैतिक इकाई न मानकर बल्की उसे सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नयन की इकाई माना गया है। निराला जी की लम्बी कविता 'राम की शक्ति पूजा' का नायक 'राम' एक साधारण मनुष्य है। वह इस गुलामी की जड़ता से व्याकुल है। वह अपनी विजय हेतु शक्ति की पूजा करता है। वह शक्ति कोई और नहीं बल्कि देश की जनता का एकजुट होना है। उसी एकता में शक्ति है। तभी किसी भी प्रकार की विजय हासिल किया जा सकता है।

होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन

छायावाद के चार स्तम्भों में से एक कवयित्री महादेवी वर्मा जी के कविताओं में प्रारम्भ से ही विस्मय जिज्ञासा, व्यथा और राष्ट्रीयता तथा आध्यात्मिकता के भाव मिलते हैं। महादेवी जी के काव्यों में कुछ आलोचकों ने निराशावाद की प्रबलता को दर्शाया है जब कि यह एक करुणा की गहन अनुभूति है।

'विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना।'

पराधीनता के कारण देश के युवाओं के सामने अपने स्वयं के अस्तीत्व की रक्षा करना भी एक चुनौती थी वे नौकरी के लिए अंग्रेजी व पाश्चात्य ज्ञान के पीछे भागने लगे। अंग्रेजी के माध्यम से देश के युवाओं को जो शिक्षा मिली उसके कारण वह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से अलग हो गये। इस प्रकार देश की जनता दो वर्ग में बट गयी।

एक वे जो भारतीय सभ्यता–संस्कृति द्वारा अपना जीवन निर्माण कर रहे थे और दूसरे वे जो पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के प्रभाव के कारण अपने से भिन्न अस्तित्व बनाने में जुटे थे।

अंग्रेजी शिक्षा ने जहाँ अंग्रेजी शासन को मजबूत करने का काम किया वहीं भारतीयों के मन में देश तथा समाज के प्रति कर्तव्य बोध की भावना को जागृत किया। उधर छायावाद के पैरलर राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा भी चल रही थी। जिनके काव्यों में राष्ट्रवाद अत्यधिक मुखरित हो रहा था। जिससे शीर्ष पर माखललाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' सियाराम शरणगुप्त, रामधारी सिंह दिनकर आदि उल्लेखनीय है।

छायावादी कवियों ने समाज व राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए सर्वप्रथम रूढ़ियों एवं पौराणिकता का निषेध किया। नये–नये मानदण्डों व मानकों का सृजन किया। यूरोपीय विद्वानों द्वारा थोपे गये इतिहास को नकार कर नया राष्ट्रीय इतिहास निर्मित किया। ये कवि किसी राजनीतिक विचारधारा के अनुगामी नहीं थे। इन्होंने हर प्रकार से रूढ़ि व अंधविश्वास पर प्रहार किया। नये विषय, नयी भाषा, नये छन्द का प्रवर्तन किया जैसा कि पंत जी ने कहाँ–

'कट गये छन्द के बन्ध'

प्रसाद जी ने कहा–

पुरातन का यह निर्मोह
सहनन करती प्रकृति पल एक।।

आधुनिक काल में छायावाद पहला काव्यधारा है जो नारी के प्रति आधुनिक और परहेजी संस्कारों से परे हटकर मानव जीवन में समानता का भाव रखा राष्ट्र की प्रगति में दोनों का सहयोग अपेक्षित है।

एक सफल मनुष्य के निर्माण में स्त्री की प्रमुख भूमिका होती है। कामायनी में प्रसाद जी लिखते हैं–

तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में
कुछ सत्ता है नारी की।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छायावादी कवियों ने राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करने के लिए मानव और समाज दोनों का समन्वय किया और तत्कालीन युग में प्रत्येक देशवासी में स्वतत्रता की भावना प्रतिष्ठित किया

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', लोकभारती प्रकाशन, संस्करण–2009
2. नामवर सिंह, 'छायावाद' द्वितीय संस्करण, 1968
3. डॉ0 ओम प्रकाश सिंह 'छायावाद कविता की आलोचना स्वरूप और मूल्यांकन
4. डॉ0 रविन्द्र कुमार, छायावाद
5. सुमन राजे 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास'
6. धर्मवीर भारती, 'मानव मूल्य और साहित्य' ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1990
7. शिवदान सिंह चौहान, साहित्यानुशीलन, प्रथम संस्करण, 1995
8. कामायनी जय शंकर प्रसाद